Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्लास्टिक मुद्रा का युवाओं पर प्रभाव – एक अध्ययन (म.प्र. के इंदौर जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. कुशल जैन कोठरी* आकांक्षा सिंह**

* प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी (अर्थशास्त्र) माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत एक विकासशील देश है। भारत में शुरूआत में वस्तु विनिमय प्रणाली द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं का भुगतान किया जाता था जो की कई बाधाओं से ग्रस्त था, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण था इसमें शामिल पक्षों के साथ वांछित वस्तुओं की अनुपलब्धता। इस समस्या के समाधान के रूप में मुद्रा का आविष्कार हुआ और 1920 में प्लास्टिक मुद्रा की अवधारणा को पेश किया गया। पिछले कुछ दशकों में प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग मे वृद्धि हुई है। भारत में लगभग 74 प्रतिशत जनसंख्या 44 वर्ष से कम आयु की है, जो की अधिक शिक्षित होने के कारण प्लास्टिक मुद्रा का नकद मुद्रा की तुलना में अधिक उपयोग कर रही है। यह अध्ययन इंदौर के युवा वर्ग पर प्लास्टिक मुद्रा के प्रभाव पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए 100 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है तथा प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों से आकड़ों का संकलन किया गया है। प्रस्तुत शोध के द्वारा प्लास्टिक मुद्रा का युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव तथा युवाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का अध्ययन किया गया है।
शब्द कुंजी – प्लास्टिक मुद्रा, प्रभाव, समस्या।

प्रस्तावना – उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के आगमन के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है। तकनीकी क्रांति के कारण पूरे व्यापार उद्योग में एक महत्वपूर्ण बदलावा आया है। प्लास्टिक मुद्रा नकद मुद्रा का एक विकल्प हैं। मुद्रा एक ऐसा विनिमय का माध्यम है, जो सामान्य तौर पर वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान के रूप में स्वीकार किया जाता है। शुरूआत में, वस्तु विनिमय प्रणाली द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं का भुगतान किया जाता था जो की कई बाधाओं से ग्रस्त था, जिसमें महत्वपूर्ण था इसमें शामिल पक्षों के साथ वांछित वस्तुओं की अनुपलब्धता। धीरे–धीरे वस्तु विनिमय प्रणाली में यह समस्याएं गंभीर हो गई। इस समस्या के समाधान की खोज करने से मुद्रा का विकास हुआ। वॉकर के अनुसार 'मुद्रा वह है जो मुद्रा करता है।' इस प्रकार 17 वीं शताब्दी में मुद्रा का महत्व अत्यधिक बढ़ गया, जिसके बाद 19वीं शताब्दी के अंत में चेक का विकास हुआ। पिछले कुछ वर्षों में, मुद्रा ने अपने रूप को सिक्कों से नकद मुद्रा में बदल दिया और आज यह इलेक्ट्रानिक मुद्रा या प्लास्टिक मुद्रा के रूप में उपलब्ध हैं। प्लास्टिक की अवधारणा 1950 में पेश की गई थी और अब यह विशेष रूप से बैंकिंग क्षेत्र में समाज का एक महत्पूर्ण हिस्सा बन गया है। प्लास्टिक मुद्रा ने भुगतान की पारंपरिक अवधारणा को बदल दिया है।

प्लास्टिक मुद्रा का विकास आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। नकदी के माध्यम से भुगतान की पारंपरिक प्रणाली को धीरे–धीरे प्लास्टिक मुद्रा ने प्रतिस्थापित कर दिया है। प्लास्टिक मुद्रा के अंतर्गत डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, स्मार्ट कार्ड आदि को शामिल किया जाता है। चुकीं इन कार्डों को बनाने के लिए प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है इसलिए इन्हें प्लास्टिक कार्ड के नाम से जाना जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग पर जोर दिया जा रहा है। युवा वर्ग द्वारा भी प्लास्टिक मुद्रा का अधिक प्रयोग किया जा रहा है तथा वह अधिक सुविधा का अनुभव भी करता है जिस कारण से आज बैंक उपभोक्ताओं को प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग करने पर जोर दे रहा है। उपभोक्ताओं द्वारा भी प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करने की वरीयता तेजी से बढ़ रही है।

भारत में प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग, 8 नवम्बर 2016 से सर्वाधिक बढ़ गया है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भ्रष्टाचार, कालाधन और जमाखोरी जैसी समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु नोटबंदी की घोषणा की जिसके कारण नकद की जगह प्लास्टिक मुद्रा के नाम से प्रसिद्ध क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड का प्रचलन तेजी से होने लगा। इस नोटबंदी ने बैंकिंग सेवा का एक नया रूप पेश किया है। विमुद्रीकरण के कारण भी प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग पर सरकार तथा बैंकों द्वारा अधिक प्रयोग पर जोर दिया गया है। **रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के अनुसार** जनवरी 2018 में डेबिट कार्ड की संख्या 36.24 मिलियन है। जनवरी 2017 और 2018 के बीच भारत में 7.39 मिलियन क्रेडिट कार्ड और 28.72 मिलियन डेबिट कार्ड की वृद्धि हुई है।

भारत की कुल जनसंख्या वर्ष 2022 में, अनुमानित जनसंख्या 15.1 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1,417,170,000 है। भारत में लगभग 74 प्रतिशत जनसंख्या 44 वर्ष से कम आयु की है, भारतीय जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा 0 से 24 वर्ष के आयु वर्ग में आता है। 16.55 प्रतिशत जनसंख्या 24 से 35 वर्ग के अंतर्गत आता है तथा 14.34 प्रतिशत जनसंख्या 36 से 44 वर्ग के अंतर्गत आते है अर्थात, भारत में युवा वर्ग की जनसंख्या अधिक है जो की शिक्षित भी है। इस कारण से इस वर्ग द्वारा प्लास्टिक मुद्रा का अधिक प्रयोग किया जा रहा होगा।

इस शोध में प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग का युवा वर्ग पर क्या प्रभाव प्रड़ता है इसका अध्ययन किया जाएगा। साथ ही प्लास्टिक मुद्रा के

उपयोगकर्ताओं का आयु, आय व लिंग के आधार पर प्रभाव का अध्ययन तथा प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करने वाले युवाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का भी अध्ययन किया जाएगा।

इस शोध पत्र से बैंकों के प्रबंधक (सलाहकारों) को भी लाभ होगा। प्रबंधक प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करने से होने वाली समस्याओं को समझ कर उन्हें दूर करने में सफल हो सकेंगे तथा क्रेडिट तथा डेबिट कार्ड में तकनिकी परिवर्तन कर सकेंगे। इस शोध से बैंकों को प्लास्टिक मुद्रा से संबंधित नयी नीतियों के निर्माण में सहायता होगी। यह शोध पत्र, भविष्य में शोधार्थी को प्लास्टिक मुद्रा से संबंधित शोध करने का आधार प्रदान करेगा।

वर्तमान समय में, इंदौर जिले में, इन तथ्यों पर शोध कार्य नहीं किया गया है इसलिए यह अध्ययन आर्थिक तथा सामाजिक रूप से प्रासंगिक है।

साहित्य की समीक्षा

अनीश बिष्ट तथा प्रवीण नायर (2015) – के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्लास्टिक मुद्रा के प्रति उपभोक्ता की जागरूकता तथा प्लास्टिक मुद्रा की ओर उदासीनता को जानना था। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्लास्टिक मुद्रा का प्रमुख लाभ, इसकी सुविधा तथा उपभोक्ताओं तक इसकी पहुँच है। शोध से यह भी परिणाम प्राप्त हुआ है कि मुद्रा की सबसे बड़ी समस्या वित्तीय संस्थानों से क्रेडिट तथा डेबिट कार्ड बनाने के लिए लेन-देन संबंधी लागत और अनावश्यक औपचारिकताओं में वृद्धि है।

कोमल ढ़ांडा (2016) – यह अध्ययन मुद्रा के प्रति उपभोक्ताओं की जागरूकता को जानने पर आधारित था। इस शोध का उद्देश्य यह जानना था कि प्लास्टिक मुद्रा उपयोगकर्ताओं के लिए वरदान है या अभिशाप और नकद मुद्रा से अधिक प्लास्टिक मुद्रा की प्राथमिकता के लिए उपभोक्ता के कारणों का अध्ययन करना। शोध से स्पष्ट होता है कि उपयोगकर्ता अपने लेन-देन के लिए नकद मुद्रा से अधिक प्लास्टिक मुद्रा का उपयोगकरना पसंद करता है और प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करने में संतुष्ट है। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि उपयोगकर्ता डेबिट कार्ड का उपयोग क्रेडिट कार्ड से अधिक कर रहा है और प्लास्टिक कार्ड के लिए आगे का मार्ग भी आशावादी है।

डॉ. प्रीता लाल (2017) – के अनुसार उपभोक्ता अधिकांशत: भुगतान क्रेडिट तथा डेबिट कार्ड के माध्यम से करता है। यह अध्ययन इस तथ्य पर आधारित था की प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग कैसे बढ़ाया जा सकता है? इनके शोध में प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करने से उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। शोध से स्पष्ट होता है की उपयोगकर्ता प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग से जुड़े सुरक्षा प्रक्रिया से पूरी तरह से अवगत नहीं है तथा इस कारण से उपभोक्ताओं को कई समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। शोध में क्रेडिट तथा डेबिट कार्ड में अंतर तथा उनके प्रकारों का भी उल्लेख किया गया है।

डॉ. जयशु एन्टोनी (2018) – यह अध्ययन प्लास्टिक मुद्रा का उपभोक्ताओं के व्यय करने के स्वरूप पर आधारित है। शोध से यह ज्ञात होता है कि अधिकांशत: प्लास्टिक मुद्रा के उपयोगकर्ता की राय में प्लास्टिक मुद्रा का उनके व्यय करने के स्वरूप पर अधिक प्रभाव पड़ा है। विश्लेषण से इस तथ्य का पता चलता है कि अधिकांश उपभोक्ता नकद मुद्रा की तुलना में प्लास्टिक मनी का उपयोग करते हैं क्योंकि यह सुरक्षित है, ले जाने के लिए सुविधाजनक है और यह उन्हें अधिक क्रेडिट विकल्प देता है।

डॉ. रिचा चौहान (2018) – का उद्देश्य भारत में प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना तथा शिक्षा के स्तर और प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग की बीच संबंध का अध्ययन करना था। शोध से यह परिणाम ज्ञात हुआ की शिक्षा के स्तर और प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग के बीच सकारात्मक संबंध है। प्लास्टिक मुद्रा का बढ़ता उपयोग बैंकों की आय का साधन बन गया है। प्लास्टिक मनी के इस्तेमाल से बैंक और उपभोक्ता दोनों को फायदा हुआ है।

सुखविंदर कौर (2018) – के अनुसार उपभोक्ता नकद मुद्रा के स्थान पर प्लास्टिक मुद्रा पसंद करते है और उपभोक्ता को जो अधिक लाभ प्लास्टिक कार्ड से मिलता है, वह सुविधा और इसकी पहुँच है। इनके अनुसार प्लास्टिक मुद्रा की प्रमुख समस्या, वित्तीय संस्थानों के कार्ड की खरीद के लिए बढ़ी हुई लेन-देन लागत और अनावश्यक औपचारिकताएँ है। इनके अनुसार प्लास्टिक मुद्रा का भविष्य उज्जवल है।

शिवांगी राय (2019) – के शोध का उद्देश्य प्लास्टिक मुद्रा के लाभ तथा हानी का अध्ययन करना तथा उपभोक्ता के संतुष्टि स्तर का अध्ययन करना है। शोध से यह परिणाम प्राप्त होता है की उपभोक्ता प्लास्टिक मुद्रा के सुलभ संचालन, गति, प्लास्टिक मनी के उपयोग के लाभों और प्लास्टिक मनी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से अधिक संतुष्ट हैं। जो उपभोक्ता व्यापारी के रूप में कार्य कर रहे है या व्यवसाय कर रह हैं, वे प्लास्टिक मुद्रा का अधिक बार उपयोग कर रहे है क्योंकि उनका कार्य भी प्लास्टिक मनी के उपयोग की मांग करता है। प्लास्टिक मनी के प्रति उपभोक्ता संतुष्टि स्तर और उपभोक्ता की वार्षिक आय के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।

अर्चना छटपर (2020)– शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि प्लास्टिक मनी इंफ्रास्ट्रक्चर में अभी भी सुधार की आवश्यकता है और जहाँ भी संभव हो प्लास्टिक मनी का उपयोग करने का सुझाव देना चाहिए। प्लास्टिक कार्ड की सुरक्षा पर भी ध्यान देना चाहिए। शोध द्वारा यह भी पाया गया है कि उपयोगकर्ता प्लास्टिक कार्ड के नियमों और शर्तों से अच्छी तरह वाकिफ नहीं है क्योंकि वे आवेदन करने से पहले नियमों को नहीं पढ़ते हैं। अंत में, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ई-कॉमर्स की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण आने वाले वर्षों में प्लास्टिक मनी का भविष्य उज्जवल है।

डॉ. एस. हेमलता (2020) – के शोध का उद्देश्य ग्रामीण सीमांत किसानों द्वारा वरीयता दी जाने वाली भुगतान विधियों का विश्लेषण करना, प्लास्टिक कार्ड से ग्रामीण भारत में सीमांत किसानों को होने वाले संभावित लाभ का विश्लेषण करना है तथा सीमांत किसानों को प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग करते समय होने वाली समस्याओं को जानना है। शोध से यह परिणाम प्राप्त हुआ की अधिकतर सीमांत किसान प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग करना पसंद नहीं करते। अध्ययन में यह सुझाव दिया गया है कि सरकार को प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग के लाभ के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए ग्रामीण भारत में कई कार्यक्रम आयोजिक करने चाहिए।

डॉ. ज्योति कपूर भार्गव (2021) – के शोध में यह परिणाम ज्ञात हुआ की अधिकांश उत्तरदाता प्लास्टिक मनी का किसी न किसी रूप में उपयोग करते हैं और उनमें से कई उपयोगकर्ता वर्षों से इसका उपयोग कर रहे हैं। इनके अनुसार बहुत से उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन कर रहे हैं क्योंकि यह सुलभ है और समय की बचत होती है।

अनुसंधान अंतराल– प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग के संबंध में, उपभोक्ताओं की पसंद और संतुष्टि के स्तर पर अध्ययन विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है परंतु शोधकर्ताओं के द्वारा कुछ क्षेत्रों के अध्ययन को ही शामिल

किया गया है। शोधकर्ताओं ने प्लास्टिक मुद्रा को प्रोत्साहित करने वाले कारकों, समस्याओं तथा प्लास्टिक मुद्रा से ग्रामीण भारत के सीमांत किसानों को होने वाले संभावित लाभ का विश्लेषण भी किया है परंतु प्लास्टिक मुद्रा का युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन नहीं किया गया है। युवाओं की लिंग और प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग के बीच क्या संबंध है, उपभोक्ता की आय और प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग के बीच क्या संबंध है तथा इंदौर जिले में प्लास्टिक मुद्रा का युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव पर शोध नहीं किया गया है।

शोध का उद्देश्य:

1. प्लास्टिक मुद्रा का युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. प्लास्टिक मुद्रा के उपयोगकर्ताओं का आयु, आय व लिंग के आधार पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करने वाले युवाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

अनुसंधानकी रूपरेखा

अनुसांधन क्षेत्र – प्रस्तुत शोध मध्य प्रदेश के इंदौर जिले में किया गया है। इंदौर मध्य प्रदेश राज्य का एक नगर है। जनसंख्या की दृष्टि से यह मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा शहर है। मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या 2022 में **85,54,8,000** करोड़ है। यह भारत में टीयर – 2 शहरों के अंतर्गत आता है। यह मध्य प्रदेश राज्य की वाणिज्यिक राजधानी भी कहलाती है। इंदौर जिले का कुल क्षेत्रफल 3,898 वर्ग कि.मी. है तथा इंदौर की कुल जनसंख्या 1475018 है। इंदौर, मध्य प्रदेश राज्य की व्यापारिक राजधानी भी है। इंदौर व्यापार और वाणिज्य का एक जीवंत केन्द्र है। अपने व्यापार और उद्योग के कारण इंदौर, मिनी मुंबई के नाम से भी प्रसिद्ध है।

न्यादर्श का आकार – अध्ययन में, उत्तरदाताओं का चयन करने के लिए उद्देश्यपूर्ण न्यायदर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यायदर्श विधि– उद्देश्यपूर्ण दैव निदर्शन विधि

न्यायदर्श आकार– 100 उत्तरदाता

अध्ययन के लिए 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है, जो की प्लास्टिक मुद्रा से अवगत है। शोध में उत्तरदाताओं का चयन करते समय विभिन्न कारकों जैसे आयु, लिंग, आय आदि को उचित महत्व दिया गया है।

आकड़ा संग्रह – अध्ययन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों स्रोतों से आकड़ें एकत्रित किये गये है।

प्राथमिक स्रोत – फील्ड सर्वे के माध्यम से, उत्तरदाताओं से प्राथमिक आकड़ें एकत्र किए गए है। आकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक स्रोत – द्वितीयक आकडें, प्रकाशित पत्रिकाओं, अनुसंधान कार्यों पर पुस्तकें, रिपोर्टें, प्रकाशन आदि से एकत्र किया गया है। इंटरनेट सेवाओं का उपयोग भी विभिन्न वेबसाईट के माध्यम से नवीनतम जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया है।

डेटा विश्लेषण – डेटा विश्लेषण करने के लिए, निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग किया गया है–

सारणी, दण्ड चित्र, वृतीय चित्र

आकड़ों का विश्लेषण–

उत्तदाताओं की आयु

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
18–25 तक की आयु	25	25	25
26–35 तक की आयु	40	40	65
36–45 तक की आयु	35	35	100
कुल योग	100		

स्रोत– सर्वेक्षण पर आधारित समंक

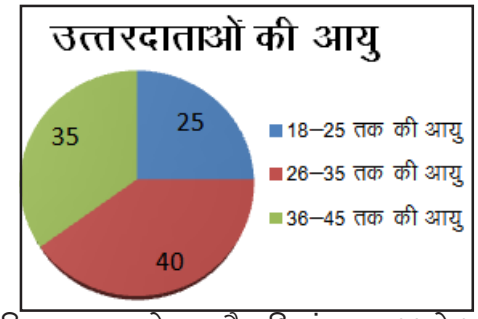

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है अधिकांश युवा 26 से 35 आयु तक के है जिनकी संख्या 40 है। आयु का भी प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग पर प्रभाव पड़ता है। तालिका से स्पष्ट होता है की 26 से 35 आयु के युवा प्लास्टिक मुद्रा का अधिक प्रयोग करते है। 36 से 45 आयु तक के उपयोगकर्ताओं की संख्या 35 है।

उत्तरदाताओं की लिंग	**आवृति**	**प्रतिशत**	**संचयी आवृति**
स्त्री	35	35	35
पुरूष	65	65	100
कुल योग	100		

स्रोत– सर्वेक्षण पर आधारित समंक

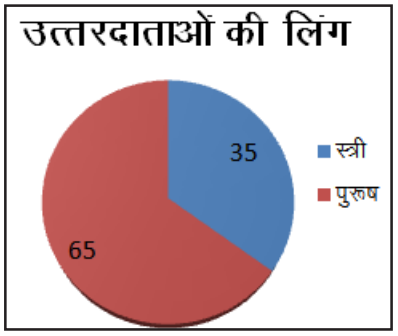

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की, स्त्रियों की तुलना में पुरूषों की संख्या अधिक है जो प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग करते है। स्त्रियों की संख्या 35 है जबकि पुरूषों की संख्या 65 है। प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग पुरूष और महिलाएं दोनों कर रहे हैं। स्त्रियों द्वारा प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग ऑनलाइन खरीदारी के लिए किया जा रहा है।

उत्तरदाताओं की शैक्षिक योग्यता –

	आवृति	**प्रतिशत**	**संचयी आवृति**
उच्च माध्यमिक	3	3	3
स्नातक	65	65	68
स्नातकोत्तर	27	27	95
अन्य	5	5	100
कुल योग	100	100	

स्रोत– सर्वेक्षण पर आधारित समंक

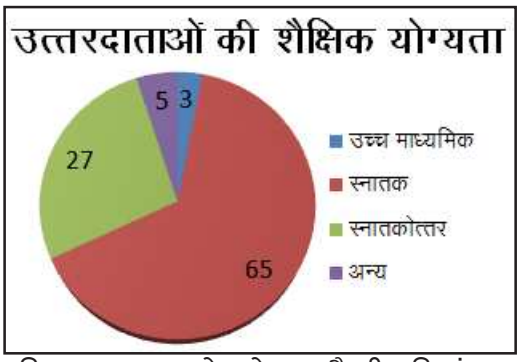

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त आलेख से स्पष्ट है की अधिकांश युवाओं की शैक्षिक योग्यता स्नातक तक की है जो की 65 प्रतिशत है। प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग पर शिक्षा का भी अधिक प्रभाव पड़ता है। उच्च शिक्षा प्राप्त युवा द्वारा प्लास्टिक मुद्रा का अधिक प्रयोग किया जा रहा है। पढ़े–लिखे उपभोक्ताओं को, प्लास्टिक मुद्रा से संबंधित कठीन शब्दावली को समझने में कठीनाई नहीं आती है।

उत्तरदाताओं का व्यवसाय –

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
विद्यार्थी	21	21	21
गृहिणी	13	13	34
निजी क्षेत्र में कार्यरत	38	38	72
सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत	19	19	91
व्यवसायी	9	9	100
कुल योग	100	100	

स्रोत– सर्वेक्षण पर आधारित समंक

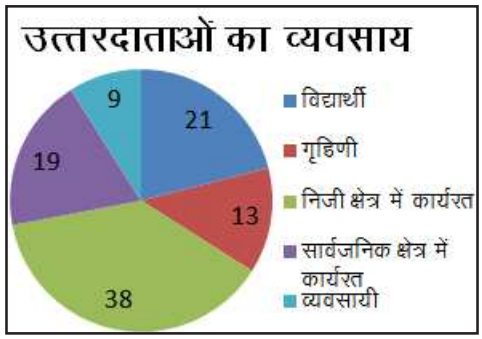

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है कि अधिकांश युवा निजी क्षेत्र में कार्यरत है जिनकी संख्या 38 प्रतिशत है। सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत युवाओं की संख्या 19 प्रतिशत है। उपभोक्ता के व्यवसाय का भी प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग पर प्रभाव पड़ता है। उपभोक्ता के व्यवसाय तथा प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग के मध्य सकारात्मक संबंध है।

उत्तरदाताओं की वार्षिक आय –

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
100000 से कम	4	4	4
100000 से 300000 के मध्य	13	13	17
300000 से 600000 के मध्य	36	36	53
600000 से 900000 के मध्य	23	23	76
900000 से 1000000 के मध्य	17	17	93
1000000 से अधिक	7	7	100
कुल योग	100	100	

स्रोत –सर्वेक्षण पर आधारित समंक

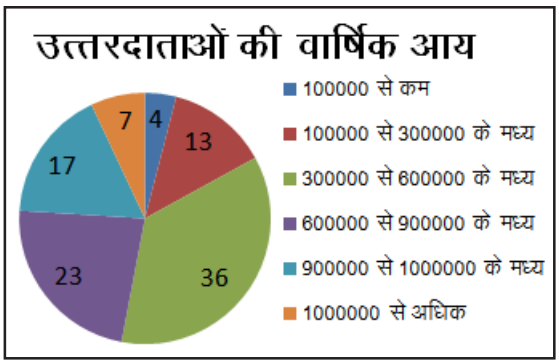

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है की, उत्तरदाताओं में से 36 प्रतिशत उत्तरदाता 300000 से 600000 रूपये के मध्य की वार्षिक आय अर्जित कर रहे है। 23 प्रतिशत उत्तरदाता 600000 से 900000 रूपये के मध्य, 17 प्रतिशत उत्तरदाता 900000 से 1000000 रूपये के मध्य तथा केवल 4 प्रतिशत उत्तरदाता 1000000 रूपये से अधिक वार्षिक आय अर्जित कर रहे है।

उत्तरदाताओं द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कार्ड के प्रकार

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
क्रेडिट कार्ड	29	29	29
डेबिट कार्ड	58	58	87
दोनों	13	13	100
कुल योग	100	100	

स्रोत –सर्वेक्षण पर आधारित समंक

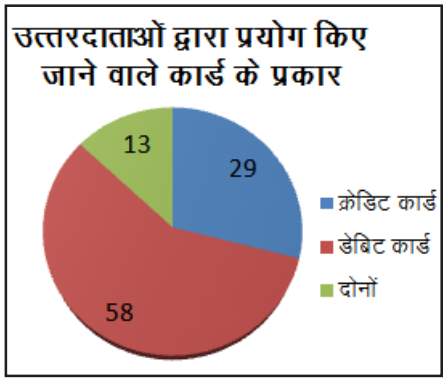

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है की अधिकांश उत्तरदाता डेबिट कार्ड का उपयोग कर रहे है। 100 उत्तरदातों में से 58 प्रतिशत उत्तरदाता डेबिट कार्ड का उपयोग कर रहे है, 29 प्रतिशत उत्तरदाता क्रेडिट कार्ड का प्रयोग कर रहे है और केवल 13 प्रतिशत उत्तरदाता ही क्रेडिट तथा डेबिट कार्ड दोनों का प्रयोग कर रहे है।

अत: ये स्पष्ट है की उत्तरदाताओं द्वारा क्रेडिट कार्ड का डेबिट कार्ड की तुलना में कम प्रयोग किया जा रहा है।

उत्तरदाताओं द्वारा प्रयोग किए जाने वाले बैंक

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
सरकारी बैंक	34	34	34
निजी बैंक	66	66	100
कुल योग	100	100	

स्रोत –सर्वेक्षण पर आधारित समंक

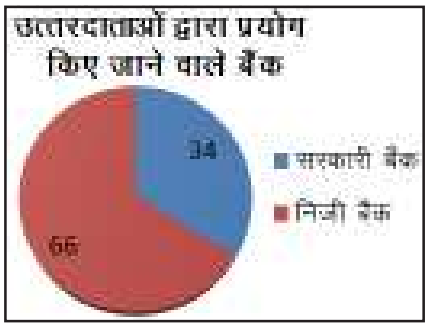

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है कि 100 में से 66 प्रतिशत उत्तरदाता निजी बैंक को अधिक वरीयता दे रहे है। 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा सरकारी बैंक का उपयोग किया जा रहा है। त्वरित निर्णय, बेहतर संचार तथा सेवाओं के कारण निजी बैंकों द्वारा जारी प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग उत्तरदाताओं द्वारा अधिक किया जा रहा है।

उत्तरदाताओं द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कार्ड का उद्देश्य

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
उपयोगिता बिल का भुगतान करने के लिए	09	09	09
ए.टी.एम. से नकद निकालने हेतु	66	66	75
ऑनलाइन पेमेंट के लिए	09	09	84
यात्रा करते समय	08	08	92
विलासिता वस्तुओं का	04	04	96
भुगतान करते समय			
अन्य उपयोग	04	04	100
कुल योग	100	100	

स्रोत –सर्वेक्षण पर आधारित समंक

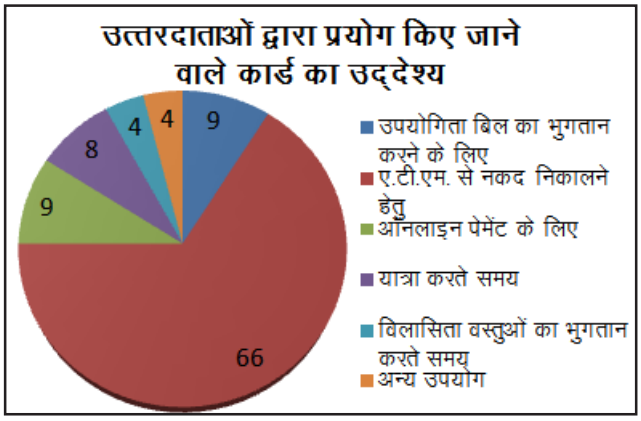

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है की अधिकांश उत्तरदाता (66 प्रतिशत) नकद निकासी के लिए प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग कर रहे हैं। उपयोगिता बिल, फीस का भुगतान करने के उद्देश्य से केवल 9 प्रतिशत उत्तरदाता ही प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग कर रहे है। 9 प्रतिशत उत्तरदाता ऑनलाइन भुगतान के लिए कार्ड का उपयोग कर रहे है। केवल 4 प्रतिशत उत्तरदाता ही यात्रा करते समय प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करते है।

अत: स्पष्ट है की अधिकांश उत्तरदाता नकद निकासी तथा उपयोगिता बिल, फीस का भुगतान करने के उद्देश्य से प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करना पसंद करते है।

उत्तरदाताओं द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कार्ड का कारण

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
चोरी या हानी का जोखिम कम से कम होना	43	43	43
क्रय शक्ति (वस्तुओं के क्रय की सुविधा)	15	15	58
भ्रष्टाचार, कालाधन तथा जमाखोरी जैसी समस्याओं मे कमी	12	12	70
भविष्य में भुगतान की सुविधा	22	22	92
अन्य कारण	8	8	100
कुल योग	100	100	

स्रोत–सर्वेक्षण पर आधारित समंक

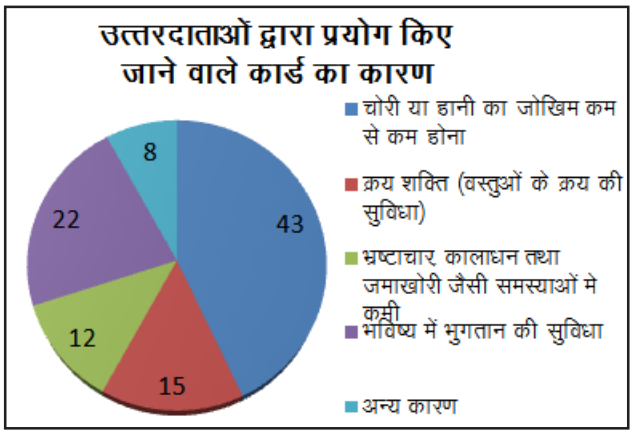

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है की अधिकांश उत्तरदाता प्लास्टिक मुद्रा के चोरी या हानी का जोखिम कम होने के कारण प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करते है। प्लास्टिक मुद्रा की तुलना में नकद मुद्रा के चोरी होने का जोखिम अधिक होता है। प्लास्टिक मुद्रा का, भविष्य में भुगतान की सुविधा होने के कारण 100 मे से 22 प्रतिशत उत्तरदाता प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करते है। 15 प्रतिशत उत्तरदाता क्रय शक्ति के कारण प्लास्टिक मुद्रा का प्रयोग करना पसंद करते है। भ्रष्टाचार, कालाधन तथा जमाखोरी जैसी समस्याओं में कमी करने के कारण 12 प्रतिशत उत्तरदाता प्लास्टिक मुद्रा का प्रयो करते है।

अत: स्पष्ट है की अधिकांश उत्तरदाता (100 में से 43 प्रतिशत) प्लास्टिक मुद्रा के चोरी या हानी का जोखिम कम होने के कारण प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करते है।

प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग के प्रति उत्तरदाताओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं

	आवृति	प्रतिशत	संचयी आवृति
विश्वास की कमी	14	14	14
उपयोग और व्यय की अधिकता की समस्या	45	45	59
ज्ञान की कमी	07	07	66
शुल्क/प्रभार/बिलिंग आदि में पारदर्शिता का अभाव	03	03	69
कठीन शब्दावली की समस्याएं	09	09	78
कार्ड की धोखाधड़ी की समस्याएं	22	22	100
कुल योग	100	100	

स्रोत–सर्वेक्षण पर आधारित समंक

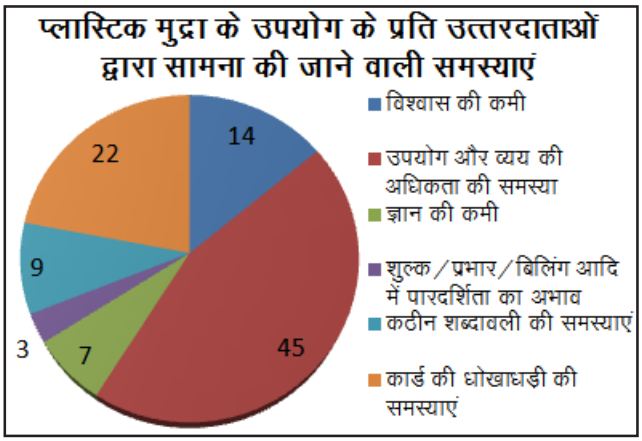

उपरोक्त तालिका तथा वृत्त से स्पष्ट है की प्लास्टिक मुद्रा का उपयोग करने में उत्तरदाताओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इनमें से सबसे प्रमुख समस्या उपयोग तथा व्यय की अधिकता है। 100 में से 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है की क्रेडिट तथा डेबिट का वे अधिक उपयोग करते है जिसके कारण अधिक खर्चे हो रहे है तथा अधिक व्यय हो रहा है। 22 प्रतिशत उत्तरदाता को प्लास्टिक मुद्रा के धोखाधड़ी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। 9 प्रतिशत उत्तरदाता को कठीन शब्दावली की समस्या हो रही है। केवल 3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शुल्क/प्रभार/बिलिंग आदि में पारदर्शिता का अभाव के कारण समस्या हो रही है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध प्रत्येक क्षेत्र के लिए सहायक होगी। मुख्यत: सरकार, सार्वजनिक बैंक, निजी बैंक, प्लास्टिक मुद्रा का अधिक प्रभाव पड़ा है। अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाता क्रेडिट कार्ड की तुलना में डेबिट कार्ड का उपयोग करते है। 100 में से 58 प्रतिशत उत्तरदाता डेबिट कार्ड का उपयोग कर रहे है। डेबिट कार्ड के, क्रेडिट कार्ड की तुलना में अधिक प्रयोग करने का मुख्य कारण नकद निकासी की सुविधा तथा क्रेडिट कार्ड के उपयोग के प्रति ज्ञान की कमी है। अध्ययन से यह भी परिणाम प्राप्त हो रहा है की उत्तरदाता के लिंग, आय तथा व्यवसाय का और प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग के मध्य सकारात्मक संबंध है। जो उत्तरदाता विद्यार्थी तथा गृहणी है, उनकी तुलना में निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत उत्तरदाता प्लास्टिक मुद्रा का अधिक उपयोग कर रहे है। प्लास्टिक मुद्रा के प्रयोग द्वारा कई समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है जिनमें सबसे प्रमुख समस्या उपयोग और व्यय की अधिकता की समस्या, ज्ञान की कमी, शुल्क/प्रभार/बिलिंग आदि में पारदर्शिता का अभाव, कार्ड की धोखाधड़ी की समस्याएं शामिल है। यदि बैंकों द्वारा इन प्रमुख समस्याओं को कम कर दिया जाए तो प्लास्टिक मुद्रा के उपयोग का प्रतिशत और अधिक बढ़ सकता है। सुषमा पाटिल (2014) के अनुसार प्लास्टिक मुद्रा का भविष्य बैंकों द्वारा प्लास्टिक कार्ड के उपयोग पर दिए जाने वाले लाभ तथा सुविधा पर निर्भर कर है। इस प्रकार स्पष्ट है की युवा वर्ग को प्लास्टिक मुद्रा से संबंधित कई आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है तथा ऐसे में युवा वर्ग को प्लास्टिक मुद्रा की तरफ मोड़ना बहुत बड़ी चुनौती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Anisha Bisht, Praveen Nair (2015). Analysis of the use of plastic money: a boon or a bane. SIMS Journal of Management Research, Volume no. 1, 2015.
2. Dhanda,Komal(2016), "Plastic cards: a blessing or a curse", International Journal of Engineering Technology and Applied Sciences, Volume 4,Issue10,ISSN 2349-4476. www.ijetmas.com
3. Lall.Preeta(2017), "An analysis of the use of plastic money in chattisgarh". GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES ISSN: - 2348-0459 Volume-6, Issue-5, April 017 Impact Factor: 2.389 www.gjms.co.in
4. Antony, Dr. Jaishu (2018)," A Study on the Impact of Plastic Money on Consumer Spending Pattern", Global Journal of Management and Business Research : G Interdisciplinary, Volume 18 Issue 3 Version 1.0 Year 2018
5. Chouhan,Dr.Richa(2018), "Study of factors affecting use of plastic money in India",Inspira-Journal of modern management &entrepreneurship(JMME), April2018, PP.205-208
6. Kaur,Sukhwinder(2018), "Relevance of plastic money, study based on Fridkot Dist.(pb)", Vol.6,Issue3, ISSN. 2321-9939
7. Rai,Shivangi(2019), "A study of customer's satisfaction towards plastic money in Bhopal(M.P)", International journal of managemaent and engineering, Vol.9, Issue:5May,2019,ISSN:2249-0558, Impact factor:7.119
8. Chhatpar,Dr.Archana(2020), "An analytical study on the use of plastic money with respect to Pune city", Journal of Emerging Technologies & Innovative Research (JETIR), October2020, Volume:7, Issue 10, ISSN: 2349-5162 www.jetir.org
9. Hemalatha,Dr.S(2020), "Impact of usage of plastic money in rural India",Engineering and Management, March-April 2020, ISSN:0193-4120, Page No.8695-8700
10. Bhargava,Dr.Jyoti Kapoor(2021), "An analytic study of the plastic money in India:, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science(IJEMMASSS), issn:2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03,No. 02(I), April-June,2021, PP.38-44
11. IIndia Population Statistics 2022 | Current Population of India – The Global Statistics – The Data Experts | Statistical Data Reports
12. Sandeepverma, 14 march,2018.